अतिरिक्त भाग

सच्ची आराधना

ह्यूगो मेकोर्ड

कुछ बच्चे उस कमरे में गए जहां प्रभु भोज तैयार किया गया था और उन्होंने रोटी और दाखरस ले लिया। क्या वे आराधना कर रहे थे? शारीरिक रूप में वे वही काम कर रहे थे, जो सहभागिता में भाग लेने के समय मसीही लोग करते हैं। परन्तु बच्चों के काम आराधना का भाग नहीं थे, न ही मसीही लोगों द्वारा भोज में भाग लेने का ऐसा कोई कार्य आराधना है क्योंकि आराधना तो इससे कहीं अधिक है।

आराधना जो है

परमेश्वर के सामने उद्‌गार

''आराधना'' शब्द का अर्थ है ''योग्य व्यक्ति को सम्मान और महिमा देना।''[1] *वेबस्टर'स डिक्शनरी* में ''आराधना'' क्रिया की परिभाषा इस प्रकार दी गई है: ''किसी दैवीय के लिए भक्ति या समर्पण; धार्मिक श्रद्धांजलि या सम्मान।''[2] आमतौर पर लोग अपने सृष्टिकर्त्ता की आराधना करना चाहते हैं। सही सोच वाला हर व्यक्ति ''जब लोगों ने मुझ से कहा, कि हम यहोवा के भवन को चलें, तब मैं आनन्दित हुआ'' (भजन संहिता 122:1) के उपदेश को आनन्दपूर्वक मानता है।

मानवीय जीवों ने ''विकसित होने वाले'' पूर्वजों से आराधना करने की इच्छा और योग्यता नहीं ली क्योंकि जानवर आराधना नहीं कर सकते। परन्तु वचन मनुष्यजाति और जानवरों में तुलना करता है:

> जैसे हिरिणी नदी के जल के लिए हांफती है,
> वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिए हांफता हूं।
> जीवते ईश्वर परमेश्वर का मैं प्यासा हूं,
> मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुंह दिखाऊंगा (भजन संहिता 42:1, 2)।

हरिणी की शारीरिक प्यास उसे पानी ढूंढ़ने के लिए विवश करती है और मनुष्य की आत्मिक प्यास उसे आनन्द के साथ ''उद्धार के सोतों से जल भरने'' के लिए ले चलती है (यशायाह 12:3)।

एक दूसरी समानता अपने आप को भंजनसंहिता 84:3 में मनुष्य और पशुओं के बीच दिखाती है:

> हे सेनाओं के यहोवा, हे मेरे राजा,
> और मेरे परमेश्वर,
> तेरी वेदियों मे गौरैया ने अपना बसेरा
> और शूपाबेनी ने घोंसला बना लिया है

जिस में वह अपने बच्चे रखे।

मन्दिर से दूर होने के कारण आराधक को पक्षियों से ईर्ष्या थी जो मन्दिर में रहते थे। उसने कहा कि वह भी वहां रहना चाहेगा:

> मेरा प्राण यहोवा के आंगनों की अभिलाषा करते-करते मूर्छित हो चला;
> मेरा तन मन दोनों जीवते ईश्वर को पुकार रहे (भजन संहिता 84:2)
>
> क्या ही धन्य हैं वे, जो तेरे भवन में रहते हैं;
> वे तेरी स्तुति निरन्तर करते रहेंगे (भजन संहिता 84:4)।

इसका अर्थ यह हुआ कि परमेश्वर की स्तुति ही उसकी आराधना है। यह मानवीय आत्मा का ईश्वरीय आत्मा की ओर बाहर को बहना है। यह उसकी जिसने आराधक को बनाया और बचाकर रखा, प्रशंसा है। यह आभार व्यक्त करना है। यह, यह कहने का एक ढंग है कि ''मैं तेरा हूं और मैं तुझ से प्रेम करता हूं।''

उत्सुकतापूर्वक मसीही व्यक्ति उस समय की प्रतीक्षा करता है जब अगली बार पवित्र लोग इकट्ठे होंगे, वैसे ही जैसे मन्दिर में जाने के लिए कहे जाने पर दाऊद के समय कोई यहूदी आनन्दित होता था (भजन संहिता 122:1)। मसीही व्यक्ति दु:खी होता है जब वह आराधना में भाग नहीं ले पाता (भजन संहिता 84:2)।

आराधना मनुष्य के मन के सृष्टि की महिमा के भरे होने पर उसकी प्रतिक्रिया है जब वह पुकार उठता है, ''संसार को केवल परमेश्वर ही बना सकता है!'' आराधना का सार न समझा जा सकता है और न इसे देखा जा सकता है। उसके मन में जो ''कितना महान!'' गाता है, प्रशंसा और धन्यवाद का विचार, भावना आवेग है।

मन का

आराधना ईश्वरीय आत्मा के साथ मनुष्य की आत्मा (आन्तरिक, अदृश्य, अतुलनीय और अनादि; देखें जकर्याह 12:1; मत्ती 22:32) की सहभागिता है, इसलिए यह कोई शारीरिक नहीं हो सकती। यदि आराधना सम्मान, श्रद्धा और श्रद्धांजलि की अभिव्यक्ति है तो मूल रूप में यह एक भावना अर्थात मन का विचार हैं। आराधक के मन में चलने वाले शारीरिक काम इसके साथ होते हैं, पर वे केवल इसके साथ हैं। आराधना में परमेश्वर की महिमा में गीत गाने के लिए होंठों का इस्तेमाल करते हुए या प्रभु भोज में भाग लेने और धन देने के लिए प्रार्थना में सिर और/या शरीर को झुकाना *सम्मिलित* हो सकता है, पर *ऐसा करना* ही आराधना नहीं है। ये काम बाहरी और शारीरिक हैं, जबकि आराधना अपने आप में अंदरूनी और मानसिक है।

लोग जब अपने मुंह से प्रेम दिखाते हैं पर उनके मन धन की ओर लगे होते हैं तो परमेश्वर की आराधना नहीं हो रही होती। (देखें यहेजकेल 33:31.) मसीह की देह की जांच (1 कुरिन्थियों 11:29; KJV) छूकर या होंठों से नहीं होती। लोग अपने होंठों से परमेश्वर का आदर कर सकते हैं जबकि वह जानता है कि उनके दिल उससे दूर हैं (मत्ती 15:8)। इसका अर्थ यह हुआ कि

आराधना का दिल आराधक के दिल में है।

सार और बाहरी

आराधना पूरी तरह से अंदरूनी होने के बावजूद कुछ बाहरी अर्थात शारीरिक कार्य लगभग हमेशा आराधना में साथ होते हैं; ऐतिहासिक रूप में आराधना करने वाला, जो कुछ मन में महसूस करता है, उसे वह आमतौर पर अपनी देह के अवसाद की तरह बाहर निकाल कर व्यक्त करने की कोशिश करता है। वास्तव में आराधाना के दर्शाने के लिए सबसे अधिक इस्तेमाल होने वाले इब्रानी शब्द *shachah* का पहला अर्थ ''नीचे को झुकना'' है। अब्राहम जब सास को दफ़नाने के लिए भूमि खरीद रहा था तो ''उठकर खड़ा हुआ और (उसने) हित्तियों के सम्मुख दण्डवत [*shachah*] किया'' (उत्पत्ति 23:7)। इसी शब्द को आराधना में परमेश्वर के सामने अब्राहम के अंदरूनी झुकने के विवरण के लिए इस्तेमाल किया गया है। अपने सेवकों को प्रतीक्षा के लिए बाहर खड़े रहने के लिए कहते हुए उसने कहा, ''गदहे के पास यहीं ठहरे रहो; यह लड़का और मैं वहां तक जाकर, और दण्डवत करके, फिर तुम्हारे पास लौट आऊंगा'' (उत्पत्ति 22:5)।

इसी प्रकार, आराधना के लिए सबसे अधिक इस्तेमाल होने वाला शब्द का पहला अर्थ (पूर्वसर्ग के बिना) ''चूमना है'' प्राचीन फारसी लोग झुककर राजा का हाथ, पांव या उसके वस्त्र का कोना चूमते थे। अन्त में *proskuneo* का शरीरिक कार्य आराधना के मानसिक कार्य में बदल गया। यह पढ़ने पर ''सच्चे भक्त [*proskunetai*] पिता की आराधना [*proskunesousia*] आत्मा और सच्चाई से करेंगे'' (यूहन्ना 4:23)।[3]

यह बिल्कुल साफ है कि शारीरिक झुकना (मरकुस 15:19 में पिलातुस के दरबार में सिपाहियों के यीशु के आगे झुकने की तरह) और वास्तविक झुकना (मत्ती 26:49 में यहूदा की तरह) कपट पूर्वक हो सकता है, जबकि मन में कोई आदर न हो। एहूद की कल्पना की जा सकती है, जिसने राजा के पेट में घोंपने से पहले राजा एबलोन के सामने झुकते और मुस्कुराते हुए तलवार अपनी जांघ के पास से निकाली थी (न्यायियों 3:14-23)। सम्मान की बाहरी अर्थात शारीरिक अभिव्यक्तियों को अपने आप में श्रद्धा या आराधना नहीं कहा जा सकता। बिना मन के अंदरूनी झुकाव के आराधना नहीं हो सकती।

इसका अर्थ यह हुआ कि आराधना का सार बाहरी बिल्कुल नहीं है। गत वर्षों में मैंने ''आराधना के पांच कार्यों'' की बात करते हुए गलती की है। मुझे आराधना शब्द की समझ नहीं थी। होंठों का फल, गाना अपने आप में आराधना नहीं है, बल्कि यह दिल में होने वाली आराधना का साथ देते हैं (इब्रानियों 13:15; 1 कुरिन्थियों 14:15)। आराधना अपने आप में बिल्कुल अंदरूनी है।

प्रभु भोज लेने के लिए अपने हाथों और मुंह का इस्तेमाल किया जाना जरूरी है, पर आराधना इन्हें लेने वाले द्वारा प्रभु की घायल और लहूलुहान देह को पहचानना और उसके लिए धन्यवाद देना है (1 कुरिन्थियों 11:29)। आराधना अपने आप में पूरी तरह मानसिक है।

गाने और प्रभु भोज की तरह ही आराधना के तीन और काम हैं। कोई भी बाहरी चीज़ अकेले आराधना नहीं है, न तो प्रार्थना करना, न चंदा देना और न बाइबल पढ़ना। मैंने ''आराधना की पांच अभिव्यक्तियों'' या ''आराधना के साथ होने वाले पांच काम'' बोलना सीखा है। अन्त में मैंने

आराधना का सार समझ लिया।

एक बार देर रात नाहोर नगर के बाहर एक कुएं के पास खड़ा अब्राहम का सेवक आराधना कर रहा था। यदि आप वहां होते तो आपको पता न चलता। उसने घुटने नहीं टेके, उसने ऊपर की ओर हाथ नहीं ऊठाए, और न ही उसने आंखें बन्द कीं। कोई शब्द नहीं बोला गया; पर यरूशलेम के सामने जोश से भरी प्रार्थना करते हुए उसने अपने मन में ही आराधना की (उत्पत्ति 24:12-14)। इसका अर्थ स्वाभाविक रूप से आराधना के विचार अर्थात स्वर्ग में पिता के साथ मन मिला लेना है।

आराधना जो नहीं है

''जो हम सब करते हैं'' वह नहीं

कुछ लोग यह सिखाते हैं कि मसीही व्यक्ति की हर बात परमेश्वर की महिमा के लिए ही होती है (1 कुरिन्थियों 10:31)। इसलिए उसका जीवन धार्मिक बनाम सांसारिक जीवन में बांटा नहीं जाता। इसे सिखाने वाले ने निष्कर्ष निकाला है कि हम जो कुछ भी करते हैं, वह आराधना ही है।

ये सदाशय शिक्षक स्पष्टतया रोमियों 12:1 के विभिन्न अनुवादों से गुमराह है: ''इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है'' (KJV)। NASB, NRSV और NIV में इस आयत में से ''सेवा'' को निकालकर ''आराधना'' शब्द को जोड़ दिया गया है, इससे कई लोग यह कहने लगे हैं कि उनकी देहें दिन के चौबीसों घण्टे मसीह की सेवा में लगी हुई हैं, जिस कारण उनकी हर बात में आराधना होती है।

जहां तक यीशु के प्रति 100 प्रतिशत समर्पण की बात है, उनकी बात सही है। ''सो तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो'' (1 कुरिन्थियों 10:31); मसीह का प्रेम मसीही लोगों को विवश करता है। ''क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है; इसलिए कि हम यह समझते हैं, कि जब एक सब के लिए मरा तो सब मर गए और वह इस निमित्त सब के लिए मरा'' (2 कुरिन्थियों 5:15)। मसीही व्यक्ति अंशकालिक सेवा में नहीं लग सकता; वह दिन-रात का सेवक है और इस जीवन में कभी रिटायर नहीं होता। वह अपने आप को पूरी तरह भूल जाता है। प्रभु ने कहा है कि जो वह अपना सब कुछ जो उसके पास है, छोड़ता नहीं, वह उसका चेला नहीं हो सकता है (लूका 14:33)।

दूसरी ओर यदि आराधना का सार किसी के मन का विचार अर्थात मन की भावना है और केवल शारीरिक कार्य ही आराधना के साथ होते हैं, तो हमारा काम आराधना नहीं है। यह सही है कि कुछ संदर्भों में रोमियों 12:1 में यूनानी शब्द (*latreuo*) का सही इस्तेमाल ''आराधना'' हुआ है। (इब्रानियों 10:2 इस शब्द को एक रूप का अनुवाद ''आराधक'' है।) परन्तु इस शब्द का अपने आप में अर्थ केवल ''सेवा'' करना है, वह सेवा चाहे परमेश्वर की हो चाहे मनुष्य की. (*Latris* भाड़े का सेवक होता है; *latron* का अर्थ ''भाड़े पर रखना या देना'' है।) कई बार शब्द

के रूप को जीवन भर परमेश्वर की सेवा के लिए इस्तेमाल किया जाता है (प्रेरितों 24:14; इब्रानियों 12:28)।

रोमियों 12:1 का संदर्भ इसे व्यक्ति द्वारा अपनी देह को जीवत बलिदान के रूप में देने को दिखाता है। यह बलिदान मनन नहीं, बल्कि जीवन भर की सेवा है (जोकि आराधना भी है)। मसीही लोगों को परमेश्वर और मनुष्य जाति की सेवा के लिए चौबीस घण्टे की नौकरी के लिए बुलाया जाता है, पर दिन में चौबीस घण्टे आराधना नहीं की जा सकती। चाहे कोई दिन में चौबीस घण्टे परमेश्वर पर ध्यान लगाए रख भी हो सकता हो तौ भी उसका कोई फायदा नहीं है; क्योंकि ऐसा व्यक्ति जीवन में काई व्यवहारिक भलाई नहीं कर सकता। यदि उसने आराधना न की हो, कोई काम नहीं किया तो उसे खाने का कोई हक नहीं है।

निरन्तर नहीं

आराधना लगातार नहीं होती। अब्राहम आराधना के लिए पहाड़ की चोटी पर गया था; फिर आराधना करने के बाद वह पहाड़ के नीचे अपने डेरे में लौट आया था (उत्पत्ति 22:1-5)।

सात दिनों तक दाऊद अपने मर रहे बच्चे की जान के लिए उपवास रखकर और प्रार्थना करते हुए जमीन पर रहा (2 शमूएल 12:15-20)। जब राजा को पता चला कि उसका लड़का मर चुका है तो वह ''उठा, और नहाकर तेल लगाया, और वस्त्र बदला; तब यहोवा के भवन में जाकर दण्डवत की; फिर अपने भवन में आया; और उसकी आज्ञा पर रोटी उसको परोसी गई, और उस ने भोजन किया'' (आयत 20)। उसका नहाना, कपड़े बदलना, उसका परमेश्वर के घर में जाना, ये सब कार्य आराधना के पहले के थे। आराधना में समय बिताने के बाद उसने घर जाकर खाना खाया। उसने आराधना लगातार नहीं की थी, और न ही हम कर सकते हैं।

इथोपिया का आदमी रथ में लगातार पांच सौ मील ''यरूशलेम में आराधना के लिए'' आया था (प्रेरितों 8:27) और फिर लौट गया। आराधना से पहले उसने लंबी यात्रा की और फिर वापस चला गया। अराधना में विराम लगता है अर्थात इसका आरम्भ भी होता है और अन्त भी। इथोपिया के आदमी के मामले में यह आरम्भ हुई और समाप्त भी हुई और फिर शुरू हो गई।

सेवा जैसी नहीं है

आराधना की कई जगहों पर एक पुराना प्रतीक लगा होता है, जिसमें कहा गया है, ''आराधना के लिए आओ और सेवा के लिए जाओ'' यह विचार आज भी सही है। कई बार यीशु ने अकेले में प्रार्थना (आराधना) की (मरकुस 1:35) और कई बार उसने लोगों में प्रार्थना (आराधना) की (मत्ती 15:35, 36)। पर उसने आराधना से बढ़कर किया: वह ''भलाई करता फिरा'' (प्रेरितों 10:38)।

आराधना परमेश्वर की सेवा है और यह करना सही है कि हम ''आराधना सेवा'' में जा रहे हैं, परन्तु हर सेवा आराधना नहीं है। अपने परिवार को सम्भालना, बच्चों को पालना, दुखियों की सहायता करना या आराम करना अच्छी बात है (1 तीमुथियुस 5:8, 10; मरकुस 6:31)। पर ऐसे काम आराधना नहीं हैं। इनमें अन्तर इस प्रकार किया जाता है:

आराधना	सेवा
परमेश्वर की ओर—	मनुष्य की ओर—
यूहन्ना 4:24; प्रेरितों 17:24, 25	गलातियों 5:13; इब्रानियों 6:10
एक विचार—भजन संहिता 95:4	एक कार्य—इफिसियों 4:28
अंदरूनी—प्रेरितों 17:25	बाहरी—लूका 10:33-35
ऊपर की ओर—भजन संहिता 95:6; यूहन्ना 17:1	सीधी—मत्ती 10:42
विराम—उत्पत्ति 22:5; 2 शमूएल 12:20	निरन्तर या विराम से— प्रेरितों 6:2; 1 तिमुथियुस 5:10
साथ होने वाले काम— प्रेरितों 2:42; इफिसियों 5:19	एक हज़ार काम— तीतुस 3:1; गलातियों 6:9

सारांश

हां, सार्वजनिक आराधना कितनी सुन्दर और सादी है! मसीही लोग सप्ताह के पहले दिन रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठा होते हैं, जो दिखाई देने वाला शारीरिक कार्य है, पर अपने दिलों में वे अपने प्रभु के लहू-लुहान शरीर को नए सिरे से पहचानते हैं (1 कुरिन्थियों 11:29; KJV)।

उनके होंठ अपने स्वर्गीय पिता की महिमा के लिए आनन्द से खुलते हैं (इब्रानियों 13:15)। देखने वाले केवल ''बाहर का रूप'' देख सकते हैं, पर ''यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है''(1 शमूएल 16:7)। प्रसन्नता से वे अपने प्रभु के लिए स्वेच्छा से भेटें अलग रख छोड़ते हैं (2 कुरिन्थियों 9:7), उन बुद्धिमानों की तरह, जिन्होंने घुटने टेक कर बालक यीशु को सोना, लोबान और मुर्र के अपने भण्डार खेल दिए थे (मत्ती 2:11)।

आराधना न तो घुटने टेकना था और न उन बुद्धिमानों की भेंट का धन, क्योंकि ये सब तो केवल आराधना के साथ थे। मसीही लोग धूप के परमेश्वर की ओर ऊपर जाने की तरह प्रार्थना करते समय अपनी आंखें बन्द कर लेते हैं, पर उनका आंखें बन्द करना आराधना नहीं है। आंखें तो केवल आराधक द्वारा परमेश्वर से बात करने पर ध्यान लगाने में सहायता के लिए बन्द की जाती हैं।

टिप्पणियां

[1]आराधना के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''worship'' एंगलोसेक्सन शब्द ''*weorthscipe*'' से लिया गया है, जो weorth जिसका अर्थ ''योग्य'' है और *scipe* जिसका अर्थ ''शिप'' का मिश्रण है; इस प्रकार ''जो योग्य है उसका आभार और सम्मान।'' [2]*वैब्स्टर'स न्यू वर्ल्ड डिक्शनरी,* तीसरा संस्क. (1997), s.v. "worship." [3]मेरा मानना है कि बिना शारीरिक हाव भाव के भी आराधना की जा सकती है। पौलुस का मानना था कि मसीही लोग बिना किसी शारीरिक अभिव्यक्ति के अपने अपने मनों में *सालो* (*psallo*) कर सकते हैं (इफिसियों 5:19)। परन्तु उनका *psallo-ing* गाने (*aido*) के साथ; परन्तु जैसा कि इफिसियों 5:19 में पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया गया, *psallo* और *aido* दो अलग अलग कार्य हैं और दोनों को एक दूसरे के बिना किया जा सकता है। *psallo* में तार छेड़ना के अलावा कोई ओर बात नहीं है। बढ़ई की रेखा तोड़ी जाए या वीणा के तार या फिर सांकेतिक अर्थ में दिल के तार, शब्द अपने आप में कुछ नहीं कहता। इसी प्रकार कोई शारीरिक क्रियाओं के साथ आराधना करे या इनके बिना, *shachah* और *proskuneo* कुछ नहीं कहते।

मसीही व्यक्ति कैसे गाता है?

ह्यूगो मेकोर्ड

''मैं आत्मा से गाऊंगा [psallo], *और बुद्धि से भी गाऊंगा* [psallo] *''(1 कुरिन्थियों 14:15)।*

मसीही लोगों को परमेश्वर की महिमा गाने की आज्ञा दी गई है। याकूब 5:13 कहता है, ''... यदि कोई आनन्दित हो, तो वह स्तुति के भजन गाए।'' आनन्दित मसीही *psallo* करता है। इसका क्या अर्थ है?

शब्द का अर्थ

यूनानी भाषा का *psallo* शब्द *psao* का एक मजबूत रूप है, जिसका अर्थ ''स्पर्श करना'' है। यह *psocho* ''मलना'' (लूका 6:1) के जैसा है। अतिरिक्त बाइबली उपयोग में ''तोड़ना'' (बढ़ई की रेखा); ''नोचना'' (बाल); ''प्रहार करना'' (लार यानी कफ़ से भूमि पर); ''टंकार करना'' (तार छेड़ना); ''बजाना'' (वीणा); और ''गाना'' सहित कई मौखिक अर्थ शामिल होते हैं। स्थायी या संज्ञा में ''टंकार करना या खींचना'' और ''भजन, गीत'' शामिल होता है।

पुराने नियम (सप्तति या LXX) में कम से कम इसके आठ उपयोग मिलते हैं:

(1) ''बजाना'' (वीणा; भजन संहिता 33:3);

(2) वीणा या साल्टरी (प्राचीन बाजा विशेष) जैसा वाद्य-यंत्र बजाया गया (दानिय्येल 3:5);

(3) बजाने, सुर से निकलने वाली आवाज़ (आमोस 5:23);

(4) बजाने वाले संगीतकार या मिंस्टरल (भजन संहिता 68:25);

(5) ''गाना'' (साल्टरी, दस्तार, वीणा, लायर (वीणा जैसा बाजा), डफली, और/या नाचना; भजन संहिता 33:2; 57:9; 71:22; 92:3; 149:3);

(6) ''गाना'' (सबसे अधिक उपयोग; न्यायियों 5:3; भजन संहिता 7:17; 9:2, 11; 13:6; 18:49; 21:13; 27:6; 30:4, 12; 47:6, 7; 59:17; 66:2, 4; 68:4; 75:9);

(7) ''गायक'' (एज्रा 7:24);

(8) गीत या भजन के रूप में, गाया जाने वाला (भजन संहिता 95:2)।

नया नियम *psallo* के अलग-अलग रूपों का इस्तेमाल बारह बार करता है। परन्तु प्रकाशितवाक्य 5:8; 14:2 और 15:2 में वीणाा के साथ गाने के हवालों में *psallo* का इस्तेमाल नहीं है। इसके अलावा, इन वचनों में पृथ्वी पर कलीसिया की बात नहीं है, जिस कारण धूप, वेदी और चार जीवित प्राणियों का अर्थ अक्षरश: लिए बिना इसे भी अक्षरश: नहीं लिया जा सकता।

Psallo के लिए पुराने नियम के तीन अर्थ नये नियम में मिलते हैं। भजनों या गीतों की बात

सात बार की गई है (लूका 20:42; 24:44; प्रेरितों 1:20; 13:33; 1 कुरिन्थियों 14:26; इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16)। चार बार इसका अर्थ ''गाना'' है (रोमियों 15:9 [भजन संहिता 18:49]; 1 कुरिन्थियों 14:15 [दो बार]; याकूब 5:13)। नये नियम में ''गानों'' के अर्थ के लिए *psallo* के इस्तेमाल का प्रेरितों 16:25 और इब्रानियों 2:12; 13:15 में समर्थन किया गया है।

इफिसियों 5:19 में केवल एक बार इसका अर्थ ''बजाना'' है, परन्तु बजाना यहां अक्षरश: नहीं है। यदि पुराने नियम की तरह यह अक्षरश: होता, तो पुराने नियम की तरह इसके अक्षरश: साज़ों को ढूंढ़ने की उम्मीद की जाती (देखें भजन संहिता 71:22 [LXX 70:22]; दानिय्येल 3:5; आमोस 5:23)। इफिसियों 5:19 अक्षरश: साज़ों का प्रतीकात्मक अर्थ हृदय दे दिया। जैसे दाऊद वीणा के तार छेड़ता था, वैसे ही मसीही लोग सुर मिलाने के लिए अपने हृदय के तारों को छेड़ते हैं।

क्या इसका अर्थ बदल गया है?

यह दावा कि पहली शताब्दी ईस्वी में *psallo* का पूरा अर्थ खो गया था पर इफिसियों 5:19 में ''गाना'' से नकार दिया जाता है, जहां गाना *psallo* से नहीं बल्कि *aido* से लिया गया है। वहां *psallo* का अर्थ ''हृदय के तार बजाना'' है। यह सांकेतिक बजाना है, जिसका अर्थ ''making melody'' [हिन्दी में ''कीर्तन करना''-अनुवादक] हुआ है। पहली सदी में जोसेफस ने *psallo* का इस्तेमाल ''वीणा बजाना'' के अर्थ में किया।[1] इस प्रकार लेखक किसी भी सदी के लिए किसी भी अर्थ के साथ इसका इस्तेमाल कर पाया।

क्या बाजे वाले साज़ की आवश्यकता है?

इसलिए कई लोग दावा करते हैं कि इफिसियों 5:19 वाले ''भजन'' के लिए तार छेड़ना आवश्यक है। यदि यह सही है तो जो लोग नये नियम का सम्मान करते हैं उनके पास मशीनी संगीत का इस्तेमाल करने की पसन्द चुनने या न चुनने की अपनी कोई इच्छा नहीं है। उन्हें इसका इस्तेमाल करना ही होगा और उन्हें दस करोड़ ग्रीक कैथोलिकों से (जो इफिसियों 5:19 को पढ़ने पर मशीनी संगीत को नकारते हैं) ऐसा ही करवाना चाहिए। यह दावा करना कि *psallo* में मशीनी साज़ शामिल है यानी यह दावा करना कि यूनानियों को पता नहीं है कि ''*psalms*'' (भजन के लिए यूनानी भाषा के क्रिया शब्द *psallo* से लिया गया) का वास्तविक अर्थ क्या है।

एक अन्य आयत में साज़ छेड़ना शामिल है, *चाहे यह मशीनी साज़ नहीं है।* 1 शमुएल 16:16, 23 में दाऊद की वीणा की तरह। नये नियम का साज़ मसीही आदमी का ''हृदय'' है (इफिसियों 5:19)। जैसे *psallo* दाऊद द्वारा अपनी वीणा के तार छूने, छेड़ने का पता देता है, वैसे ही *psallo* मसीही व्यक्ति के अपने हृदय के तार को छूना या छेड़ना है। अंग्रेज़ी अनुवाद ''singing [*aido*] and making melody [*psallo*] in your heart'' (KJV) और ''singing and making melody with your heart'' (ASV) अच्छे और सुन्दर हैं, परन्तु *psallo* का स्पर्श करने का कार्य ''गाने और अपने हृदय के तार छेड़ने'' के द्वारा और संक्षेप में ठहराया गया है।

कई लोग यह कहते हुए कि ''अपने-अपने मन में'' का अर्थ केवल ''मन से'' है, इस बात से इनकार करते हैं कि इफिसियों 5:19 में हृदय के तार छेड़ना प्रतीकात्मक है। परन्तु यदि हृदय के

तार छेड़ना प्रतीकात्मक नहीं है तो कुछ छेड़ना अवश्य होना चाहिए, जो मन से हो। तो फिर छेड़ने के लिए किसी चीज़ की आवश्यकता होगी! यदि कोई वीणा बजाने की बात को मानता है तो उसके लिए यह समझना आवश्यक है कि न तो नये नियम की कलीसिया और न कलीसिया के आरम्भिक लोग इसे मानते थे।

इतिहास की साक्षी

दि चर्च फ़ादर्स एण्ड म्यूज़िकल इंस्ट्रूमेंट्स, में जेम्स डब्ल्यू. मेकिनाम[2] ने दिखाया कि आरम्भिक कलीसिया का संगीत पूर्णतया मौखिक था और कलीसिया के अगुवे आराधना में गाने के साथ साज़ों के होने का विरोध करते थे। इसलिए इफिसियों 5:19 के अक्षरश: वीणा बजाने को छोड़ देना आवश्यक है; इस प्रकार व्यक्ति हृदय के तारों के प्रतीकात्मक छेड़ने को विवश होता है।

क्या यह सामान्य है?

किसी ने कहा कि ''कीर्तन करते रहा करो'' के लिए ''making melody'' वाक्यांश सामान्य है और इसमें मौखिक और वाद्य दो तरह का संगीत है। अंग्रेज़ी वाक्यांश में यह सही है, पर *psallo* में नहीं। *Psallo* का अर्थ ''बजाना'' या ''गाना'' दोनों ही हो सकते हैं, पर शब्द को एक जगह इस्तेमाल करने पर इसके अलग-अलग अर्थ नहीं हो सकते।

अधिकतर यूनानी शब्दकोषों में चारों जगह (और नये नियम के अंग्रेज़ी संस्करणों में इसका काफी इस्तेमाल होता है) *psallo* की परिभाषा ''गाना'' है:

> ... इसलिए मैं जाति-जाति में तेरा धन्यवाद करूंगा, और तेरे नाम के भजन गाऊंगा [*psallo*] (रोमियों 15:9)।
>
> सो क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा, बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा; मैं आत्मा से गाऊंगा [*psallo*], और बुद्धि से भी गाऊंगा [*psallo*] (1 कुरिन्थियों 14:15)।
>
> ... यदि आनन्दित हो, तो वह स्तुति के भजन गाए [*psallo*] (याकूब 5:13)।

परमेश्वर की योजना में हर मसीही के लिए दो कार्य ठहराए गए हैं: (1) कुछ बाहरी और सुनाई देने वाला: ''होंठों का फल'' (इब्रानियों 13:15), यानी ''गाना'' और (2) कुछ भीतरी और सुनाई देने वाला, ''अपने-अपने मन में कीर्तन करते'' यानी मन के तार छेड़ते हुए (इफिसियों 5:19)।

परमेश्वर की योजना से बनाए इन दोनों कार्यों को अलग नहीं किया जा सकता। हृदय से ताल मिलाए बिना होंठों का गाना दोषपूर्ण है। ऐसे गाने के लिए यीशु ने पिता का विचार बताया:

> हे कपटियो, यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यवाणी ठीक ही की है कि ''ये लोग होंठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर रहता है। और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्य की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।'' (मत्ती

15:7-9)।

सारांश

यदि हर मसीही के लिए गाना आवश्यक है तो अकेले और क्वायर में गाना तो बीच में से निकल गया। यदि हर मसीही के लिए भीतरी और किसी को सुनाई न देने वाला संगीत गाना आवश्यक है तो संगीत के बाहरी और सुनाई देने वाला संगीत बाहर निकल जाता है।

टिप्पणियां

[1]जोसेफस *एंटीक्विटीस* 6.8.2. [2]जेम्स डब्ल्यू. मैकिनाम, ''द चर्च फ़ादर एंड म्यूज़िकल इंस्ट्रूमेंट्स'' (डॉक्टरल डिस्सरटेशन, कोलम्बिया यूनिवर्सिटी, 1965)।

हमारी आराधना में मशीनी संगीत: चार ईश्वरीय नियमों का उल्लंघन

ह्यूगो मेकोर्ड

आराधना में मशीन के इस्तेमाल से बनाए गए संगीत को शामिल करने से नये नियम की चार मुख्य शिक्षाओं को नकारा जाता है:

विश्वास का नियम

''विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (रोमियों 10:17)। वचन के साथ मेल खाते हुए हम गाते, प्रार्थना करते, वचन पढ़ते, चंदा देते और प्रभु-भोज में भाग लेते हैं (1 कुरिन्थियों 11:26; 16:1, 2; कुलुस्सियों 3:16; 4:16; 1 तीमुथियुस 2:1, 2)। विश्वास का नियम मसीही लोगों को ''लिखे हुए से आगे'' जाने से रोकता है (1 कुरिन्थियों 4:6; ASV)। हमें बताया गया कि ''जो कोई मसीह की शिक्षा से आगे बढ़ जाता है और उसमें बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं'' (2 यूहन्ना 9क; NIV)।

आराधना का नियम

स्वीकार्य आराधना (1) मन के सही व्यवहार से (यूहन्ना 4:24); (2) सच्चाई से मेल खाती (जो परमेश्वर का ईश्वरीय वचन है; यूहन्ना 4:24; 16:13; 17:17; कुलुस्सियों 3:17) और (3) ''मनुष्य की विधियों'' (मत्ती 15:9) से स्वतन्त्र होती है।

एकता का नियम

''मेल के बन्ध में आत्मा की एकता'' (इफिसियों 4:3) से ऊपर ''मसीह की शिक्षा'' (2 यूहन्ना 9; देखें यूहन्ना 12:48) में शुद्धता (''पहले तो पवित्र, फिर मिलनसार''; याकूब 3:17) है। जब मसीह की शिक्षा मुद्दा नहीं होती तो एकता का नियम हर मसीही को मण्डली को इकट्ठे रखने के लिए पूरी कोशिश करने के लिए कहता है, यह जानते हुए कि ''फूट ... झगड़ा, ईर्ष्या, विधर्म शरीर के काम'' हैं (1 कुरिन्थियों 1:10; गलातियों 5:19, 20)।

प्रेम का नियम

''भाईचारे की प्रीति बनी रहे'' (इब्रानियों 13:1; KJV)। जब नि:स्वार्थ प्रेम हावी हो जाता है तो मसीही लोग ''अपने ही हित की ही नहीं, वरन दूसरों के हित की भी चिन्ता'' करने की आज्ञा का पालन करते हैं (फिलिप्पियों 2:4)। मिडवे, कैंटकी में 1859 में लगता है कि भाईचारे की प्रीति नहीं थी जब सभा कक्ष में एक मैलोडियन लाया गया, जिस कारण कुछ मसीही लोगों को वहां से जाना पड़ा। अगुआई करने वालों को अन्य मसीही लोगों की संगति के बजाय मशीन का शोर पसन्द था। शीशे के एक बॉक्स में उस मैलोडियन को प्रेम के नियम का उल्लंघन करने के लिए वास्तविक घटना को स्मरण रखने के लिए सम्मान की स्थिति देते हुए मिडवे कॉलेज के पुस्तकालय में रखा गया है।

> यदि कोई कहे, कि मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूं; और अपने भाई से बैर रखे; तो झूठा है: क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता। और उससे हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे (1 यूहन्ना 4:20, 21)।

प्रभु-भोज कितनी देर बाद लिया जाए?

प्रभुभोज के विषय में पूछे जाने वाले अधिकतर प्रश्न इस बारे में होते हैं कि यह कब-कब लिया जाना चाहिए। कइयों का विचार है कि प्रत्येक सप्ताह इसमें भाग लेने का अर्थ इसे इतनी अधिक बार लेना है कि जिससे इसका महत्व कम हो जाएगा। परन्तु गाने, प्रार्थना करने, प्रचार करने या चंदा देने के बारे में ऐसा कोई नहीं सोचता। मैंने कभी किसी प्रचारक को यह कहते नहीं सुना कि हर हफ्ते प्रचार करने से परमेश्वर के वचन के प्रचार का महत्व कम हो सकता है। एकसमान रूप से लागू न किया जा सकने वाला कोई भी तर्क कमज़ोर है। आराधना की किसी अभिव्यक्ति के कम होने की बात उसके किए जाने की बारम्बारता से नहीं, बल्कि आराधना करने वाले के व्यवहार से होती है।

यदि नये नियम का इस्तेमाल किसी भी मानक के रूप में किया जाना है तो निश्चय ही यह कलीसिया की आराधना का भी मानक होना चाहिए। आराधना हर मसीही द्वारा उसके जीवन में परमेश्वर की गतिविधि की उपयुक्त प्रतिक्रिया है। आरम्भिक मसीही लोगों को आराधना में निर्देश और अगुआई प्रेरितों की शिक्षा से दी जाती थी। प्रमाण की अत्यधिक बात यह है कि वे रोटी तोड़ने, अर्थात प्रभुभोज में भाग लेने के लिए प्रभु के दिन हर (प्रभु वार) अर्थात सप्ताह के पहले दिन इकट्ठे होते थे। पौलुस और उसके सहयात्री जब त्रोआस में आए तो वे वहां कलीसिया के इकट्ठे होने की प्रतीक्षा में सप्ताह भर रुके रहे। सप्ताह के पहले दिन वे रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे हुए (प्रेरितों 20:7)। पौलुस ने कुरिन्थुस के लोगों को सप्ताह के पहले दिन वह धन इकट्ठा करने का निर्देश दिया, जो उसे यहूदिया के निर्धनों की सहायता के लिए चाहिए था, जो साफ है कि उनके इस दिन इकट्ठे होने के कारण था (1 कुरिन्थियों 16:1, 2)। उसने पहले ही निर्देश दे दिया था कि प्रभुभोज सही ढंग से कैसे लेना है (अध्याय 11), जो इस बात का संकेत है कि वे प्रभु के यादगारी भोज में भाग लेने के लिए इकट्ठे होते थे। यदि सप्ताह में एक बार होते थे तो हर रविवार, आराधना के लिए मिलने का बहुत दूर का दिन नहीं था। यह प्रभु की मेज़ के पास बहुत बार-बार इकट्ठा होने का भी दिन था। ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि आरम्भिक कलीसिया इसके विपरीत करती थी। वे प्रेरितों के निर्देश का पालन करते थे और हमें भी करना चाहिए।

परमेश्वर के साथ उसके वचन के द्वारा बात करना

सहभागिता की अवधारणा आमतौर पर प्रभु भोज में भाग लेने से जुड़ी है। हमने ध्यान दिलाया है कि प्रार्थना भी परमेश्वर के साथ सहभागिता है। परन्तु आराधना की कोई भी अभिव्यक्ति निष्पक्ष रूप से परमेश्वर के वचन को पढ़ने या सुनाने से सहभागिता के चक्र को पूरा नहीं कर सकती। हमारे साथ सहभागिता रखने का परमेश्वर द्वारा चुना यह सबसे स्पर्शनीय माध्यम है। प्रार्थना और गीत में हम परमेश्वर के साथ बातें करते हैं। वचन के द्वारा परमेश्वर हमसे बात करता है। जिम्मी जिविडन ने कहा है, ''प्रार्थना में आराधना हमारे मनों की तड़प को दिखाती है। उसके वचन को सुनने में आराधना अपने मनों में परमेश्वर के मन की इच्छाओं को ग्रहण करना है।''[1]

एंडी टी. रिची ने माना कि वर्षों के बाद उसने आराधना में प्रचार करने की वैधता की अपनी अवधारणा को ठीक कर लिया। यह सब ''संदेश देना,'' ''घोषणा करना'' या ''उद्घोषित करना'' के लिए यूनानी याब्द *kerygma* के रूप में प्रचार करने का अध्ययन करने से हुआ है (देखें मत्ती 12:41; 1 कुरिन्थियों 1:21; 2 तीमुथियुस 4:17)। उसने लिखा, ''जब प्रीचिंग से लोगों को यह संदेश पुन: आश्वासन देते हुए, यकीन दिलाते हुए और ऊपर उठाते हुए संदेश देता है तो यह गाने प्रभुभोज और *kerygma* की आत्मा में आराधना का अन्य सब 'चीज़ों' से मेल खाती है।''[2]

भविष्यवाणी करने की तरह ही प्रचार करना भी एक-दूसरे से बातें करना है। ''व्यापक अर्थ में कोई भी वास्तविक प्रचारक भविष्यवक्ता ही है।''[3] प्रचार करना वह माध्यम है, जिसे परमेश्वर ने आराधना में इकट्ठे हुए लोगों से बात करने के माध्यम के रूप में चुना है। इसलिए प्रचारकों को पता होना चाहिए कि उनका काम परमेश्वर का वचन सुनाना अर्थात आराधना करने आए लोगों का ध्यान उसकी ओर लगाना है। किसी और उद्देश्य के लिए किया गया प्रचार आराधना की प्रक्रिया का प्रतिप्रभावी है। प्रचारक जब सचुमच परमेश्वर का सेवक है और उसका संदेश परमेश्वर का ही संदेश है, तो परमेश्वर उस प्रचार की आवाज़ का इस्तेमाल अपने वचन की उद्घोषणा के लिए करता है। जब सभा परमेश्वर के दिए संदेश को सुनती और इसे खाकर इसे मानती हैं तो वे परमेश्वर का आदर करते हैं। यही आराधना है! वचन को सुनने और इसे ग्रहण करने के द्वारा आराधक परमेश्वर के साथ बात करता है।

टिप्पणियां

[1]जिम्मी जिविडन, *मोर दैन ए फीलिंग: वरशिप दैटप्लीज़स गॉड* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1999), 121. [2]एंडी टी. रिची जूनि., *दाऊ शैल्ट वरशिप द लॉर्ड दाई गॉड* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1969), 77. [3]वही, 79.